# भारतीय विद्यालय डारसेट

## हिंदी विभाग

पाठ : **<u>धर्म की आड़</u>** कार्यपत्रिका की तिथिः ----------

संसाधन व्यक्तिः श्रीमती बीना स्टिफन तिथिः----------

विद्यार्थी का नाम :---------- कक्षा : IX ब

| | | |
|---|---|---|
| 1. | आज धर्म के नाम पर क्या-क्या हो रहा है ? | |
| उ. | आज धर्म के नाम पर उत्पात (violence)किए जाते हैं, जिद की जाती है और आपसी झगड़े करवाए जाते हैं । | |
| 2. | धर्म के व्यापार को रोकने के लिए क्या उद्योग होने चाहिए ? | |
| उ. | धर्म के व्यापार को रोकने के लिए साहस और दृढ़ता के साथ उसका विरोध होना चाहिए । | |
| 3. | लेखक के अनुसार स्वाधीनता आंदोलन का कौन सा दिन सबसे बुरा था ? | |
| उ. | आज़ादी के आंदोलन (agitation) के दौरान सबसे बुरा दिन वह था जब स्वाधीनता के लिए खिलाफ़त(representative of prophet), मुल्ला-मौलवियों और धर्माचार्यों को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दिया गया । | |
| 4. | साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में क्या बात अच्छी तरह घर कर बैठी है ? | |
| उ. | साधारण से साधारण आदमी तक के दिल में यह बात अच्छी तरह घर करके बैठी है कि धर्म और ईमान के नाम पर अपनी जान दे देना उचित है । | |
| | **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए -** | |
| 5. | चलते-पुरज़े लोग धर्म के नाम पर क्या करते हैं ? | |
| उ. | चलते-पुरज़े लोग धर्म के नाम पर लोगों को बेवकूफ़(stupid, foolish)बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं ।वे चाहते हैं कि उनका नेतृत्व(leadership) कायम रहे । उनका प्रभाव(effect) बना रहे । | |
| 6. | चालाक लोग साधारण आदमी की किस अवस्था का लाभ उठाते हैं ? | |
| उ. | चालाक लोग साधारण आदमी की धर्म के प्रति अटूट आस्था का लाभ उठते हैं । वे अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए ऐसे आस्थावान धार्मिक(religious believers) लोगों को मरने-मारने के लिए छोड़ देते हैं । | |

| | | |
|---|---|---|
| 7. | आनेवाला समय किस प्रकार के धर्म को नहीं टिकने देगा ? | |
| उ. | जो लोग धर्म के प्रति दिखाना-मात्र करके लोगों को आपस में लड़वाते हैं, आनेवाला समय उन्हें टिकने नहीं देगा । जन-साधारण(common man) की समझ में आ गया है कि ऐसे धार्मिक नेता(religious leader) उनकी भावनओं(emotions) से खेलते है। | |
| 8. | कौन-सा कार्य देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा ? | |
| उ. | देश की आज़ादी के लिए किए जा रहे प्रयासें में मुल्ला-मौलवी और धर्माचार्यों की सहभागिता को देश की स्वाधीनता के विरुद्ध समझा जाएगा । लेखक के अनुसार , धार्मिक व्यवहार से स्वतंत्रता की भावना पर चोट पहुँचती है । | |
| 9. | पाश्चात्य देशों में धनी और निर्धन लोगों में क्या अंतर है ? | |
| उ. | पाश्चात्य देशों में धनी लोगों के पास पैसा है, ऊँची-ऊँची इमारतें हैं , सुख-सुविधा है । गरीब लोग रोटी के लिए संघर्ष करते हैं और झोपड़ियों में रहते हैं । | |
| 10. | कौन-से लोग धार्मिक लोगों से अधिक अच्छे हैं ? | |
| उ. | नास्तिक(atheist) लोग, जो किसी धर्म को नहीं मानते, वे धार्मिक लोगों से अच्छे हैं । उनका आचरण(behaviour) अच्छा है । वे सदा सुख-दुख में एक-दूसरे का साथ देते हैं । दूसरी ओर धार्मिक लोग एक-दूसरे को धर्म के नाम पर लड़वाते हैं । | |
| | **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए -** | |
| 11. | धर्म और ईमान(belief) के नाम पर किए जाने वाले भीषण व्यापार को कैसे रोका जा सकता हैं ? | |
| उ. | धर्म और ईमान(belief) के नाम पर दंगे-फसाद हो रहे हैं । कुछ स्वार्थी आदमी धर्म के नाम पर लोगों को आपस में लड़वाते हैं । अपने निजी स्वार्थों के लिए आम आदमी के प्राण ले लिए जाते हैं । इसको रोकने का उपाय है कि लोगों को उन आदमियों और धर्म की सही शिक्षा के लिए जानकारी दी जाए । लोगों को समझाया जाए कि दंगा करके खून बहाने वालों का कोई धर्म नहीं होता । | |
| 12. | 'बुद्धी की मार ' के संबंध में लेखक के क्या विचार हैं ? | |
| उ. | 'बुद्धी की मार ' से लेखक का अर्थ है कि लोगों की बुद्धि में ऐसे विचार भरना कि वे उनके अनुसार काम करें । धर्म के नाम पर, ईमान के नाम पर लोगों को एक-दूसरे के खलाफ भड़काया जाता है । लोगों की बुद्धि पर परदा डाल दिया जाता है । उनके मन में दूसरे धर्म के विरुद्ध ज़हर भरा जाता है। इसका उद्देश्य खुद का प्रभुत्व बढ़ाना होता है । | |
| 13. | लेखक की दृष्टि में धर्म की भावना कैसी होनी चाहिए ? | |
| उ. | लेखक के अनुसार, धर्म के विषय में मानव स्वतंत्र होना चाहिए । हर व्यक्ति आज़ाद | |

| | | |
|---|---|---|
| | हो। वह जो धर्म अपनाना चाहे, अपनाए। कोई किसी की स्वतंत्रता में बाधा न खड़ी करे । धर्म का संबंध हमारे मन से, ईमान से ,ईश्वर और आत्मा से होना चाहिए । वह मन को शुद्ध करने का मार्ग होना चाहिए , अपने जीवन को ऊँचा उठाने का साधन होना चाहिए, दूसरे को कुचलने का नहीं । | |
| 14. | महात्मा गाँधी के धर्म-संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए । | |
| उ. | महात्मा गाँधी अपने जीवन में धर्म को महत्त्वपूर्ण स्थान देते थे । वे एक कदम भी धर्म-विरुद्ध नहीं चलते थे । परंतु उनके लिए धर्म का अर्थ था -ऊँचे विचार तथा मन की उदारता । वे 'कर्तव्य' पक्ष पर जोर देते थे । वे धर्म के नाम पर हिंदू-मुसलमान की कट्टरता (conservative) के फेर में नहीं पड़ते थे । एक प्रकार से कर्तव्य ही उनके लिए धर्म था । | |
| 15. | सबके कल्याण (welfare) हेतु(for) अपने आचरण को सुधारना क्यों आवश्यक है ? | |
| उ. | जब तक हम स्वयं का आचरण ठीक नहीं रखेंगे, दूसरे लोगों को उसकी प्रेरणा नहीं दे सकते। समाज में उदाहरण बनने के लिए हमें स्वयं का आचरण सुधारना होगा । मानव मात्र की भलाई तभी हो सकती है, जब हम निजी स्वार्थ को छोड़कर पूरे समाज की भलाई के बारे में सोचें । | |